

इस वर्ष एवररेडी बन बाप के दिल की आशाओं को पूर्ण करने वाले दीपक बनना ही है

(2007-2008 सीजन की अव्यक्त मुरलीयों का खजाना) (HOME WORK – AT A GLANCE)

- अब यह नहीं समझो कि हम सेन्टर निवासी, मधुवन निवासी हृद के सेवाधारी हैं, नहीं, लेकिन विश्व की स्टेज के विशेष पार्टधारी हैं। सारे विश्व की नज़र अब दादी की प्रत्यक्षता के साथ आप सबके तरफ है। विश्व की नज़र, जो भी ब्रह्माकुमार कुमारी कहलाते हैं, छोटा है, बड़ा है, किसी भी कार्य के अर्थ निमित्त है, चाहे छोटे कार्य के भी निमित्त है लेकिन एक- एक के ऊपर, विश्व के आत्माओं की नज़र है। यह रूहानी किला है। ब्रह्माकुमार ब्रह्माकुमारी मानना अर्थात् इस रूहानी किले की प्रत्यक्षता के निमित्त आत्मार्थें हो, एक- एक किले की ईंट जिम्मेवार है। सभी को समझना चाहिए मैं निमित्त हूँ, वायुमण्डल को पावरफुल बनाने के लिए मैं निमित्त हूँ, दूसरे नहीं।
- बाप सभी बच्चों को क्या वरदान देते हैं? फरिश्ता स्वरूप भव। फरिश्ता उड़ता है, चलता नहीं है, उड़ता है। बाप ने आप सभी से गैरन्टी ली है कि जो भी किसी भी प्रकार का बोझ अगर मन में, बुद्धि में है तो बाप को दे दो, बाप लेने ही आये हैं। तो बाप को बोझ दिया है या थोड़ा-थोड़ा सम्भाल के रखा है? जब लेने वाला ले रहा है, तो बोझ देने में भी सोचने की बात है क्या? बोझ से दिल लग गई है? छोड़ो, छोड़ो तो छूटो। छोड़ते नहीं हैं तो छूटते नहीं हैं। छोड़ने का साधन है - दृढ़ संकल्प। दृढ़ संकल्प करते हो लेकिन किये हुए दृढ़ संकल्प को रिवाइज़ नहीं करते हो। बार-बार मन से रिवाइज़ करो और रियलाइज़ करो। रियलाइज़ेशन का कोर्स अभी थोड़ा और अण्डरलाइन करो। कहना और सोचना यह करते हो, लेकिन दिल से रियलाइज़ करो - बोझ क्या है और डबल लाइट क्या होता है? अन्तर सामने रखो क्योंकि बापदादा अभी समय की समीपता प्रमाण हर एक बच्चे में क्या देखने चाहते हैं? जो कहते हैं वह करके दिखाना है। जो सोचते हो वह स्वरूप में लाना है।
- चेक करो सर्व बंधनों से मन और बुद्धि मुक्त हुए हैं? क्योंकि ब्राह्मण जीवन में कई बातों से जो पास्ट लाइफ के बन्धन हैं, उससे मुक्त हुए हो। लेकिन सर्व बन्धनों से मुक्त हैं या कोई कोई बंधन अभी भी अपने बन्धन में बांधता है? इस ब्राह्मण जीवन में मुक्ति जीवनमुक्ति का अनुभव करना ही ब्राह्मण जीवन की श्रेष्ठता है अगर किसी भी प्रकार का चाहे देह का, चाहे कोई देह के सम्बन्ध, माता पिता बंधु सखा नहीं, देह के साथ जो कर्मेन्द्रियों का सम्बन्ध है, उस कोई भी कर्मेन्द्रियों के सम्बन्ध का बंधन है, आदत का बंधन है, स्वभाव का बंधन है, पुराने संस्कार का बंधन है, तो बाप समान कैसे हुए? और रोज़ वायदा करते हो बाप समान बनना ही है। वायदा और फायदा का बैलेन्स नहीं जानते। वायदों का फाइल बापदादा के पास बहुत बहुत- बहुत बड़ा है, सभी का फाइल है। ऐसे ही फायदे का भी फाइल हो, बैलेन्स हो, तो कितना अच्छा लगेगा?
- स्व सेवा और विश्व सेवा, स्व सेवा अर्थात् चेक करना और अपने को बाप समान बनाना। कोई भी कमी, कमजोरी बाप को दे दो ना, क्यों रखी है, बाप को अच्छा नहीं लगता है। क्यों कमजोरी रखते हो? दे दो। देने के टाइम छोटे बच्चे बन जाओ। कोई ऐसी बात हो, बाबा हाजिरा हज़ूर है, उसको दे दो, और अगर वापस आवे तो अमानत समझके फिर दे दो। अमानत में ख्यानत नहीं की जाती है। तो दे दो। बाप लेने के लिए आया है। और तो कुछ आपके पास है नहीं जो दो। लेकिन यह तो दे सकते हो ना। अक के फूल हैं, वह दे दो।
- अभी स्व सेवा के प्रति खास समय दे रहे हैं। अभी देख तो लिया, बापदादा ने कितने समय से दो शब्द बार-बार रिवाइज़ कराये हैं, वह दो शब्द कौन से हैं? अचानक और एवररेडी। याद है ना! याद है? जब भी दादी की याद आवे तो सिर्फ चित्र नहीं देखना लेकिन यह याद करो कि मैं भी एवररेडी हूँ। मुझे भी अचानक का पाठ याद है? अभी-अभी मैं भी अचानक चली जाऊँ, तो नष्टोमोहा, प्रकृतिजीत हूँ?
- हर एक बच्चे को यह रूहानी फखुर रहता है, दिल में गीत गाते हैं - पाना था वो पा लिया? सभी के दिल में यह स्वतः ही गीत बजता है ना! फखुर है ना! जितना इस फखुर में रहेंगे तो फखुर की निशानी है, बेफिक्र होंगे। अगर किसी भी प्रकार का संकल्प में, बोल में या सम्बन्ध-सम्पर्क में फिकर रहता है- तो फखुर नहीं है। बापदादा ने बेफिक्र बादशाह बनाया है। बोलो, बेफिक्र बादशाह हो?
- बापदादा ने तो कह दिया है सब फिक्र वा किसी भी प्रकार का बोझ है तो बापदादा को दे दो। बाप सागर है ना। तो बोझ सारा समा जायेगा। कभी बापदादा बच्चों का एक गीत सुनके मुस्कराता है। पता है कौन सा गीत? क्या करें, कैसे करें.... कभी कभी तो गाते हो। बापदादा तो सुनता रहता है। लेकिन बापदादा सभी बच्चों को यही कहते हैं- हे मीठे बच्चे, लाडले बच्चे साक्षी-दृष्टा के स्थिति की सीट पर सेट हो जाओ और सीट पर सेट होके खेल देखो, बहुत मजा आयेगा, वाह! त्रिकालदर्शी स्थिति में स्थित हो जाओ। सीट से नीचे आते, इसलिए अपसेट होते हो। सेट रहो तो अपसेट नहीं होंगे। यह तीन चीज़ें बच्चों को परेशान करती हैं। कौन सी तीन चीज़ें? - चंचल मन, भटकती बुद्धि और क्या कहते हैं? पुराने संस्कार। बापदादा को बच्चों की एक बात सुनके हंसी आती है, पता है कौन सी बात है? कहते हैं बाबा क्या करें, मेरे पुराने संस्कार हैं ना! बापदादा मुस्कराता है। जब कह ही रहे हो, मेरे संस्कार, तो मेरा बनाया है? तो मेरे पर तो अधिकार होता ही है। क्या यह ब्राह्मण आत्मा कह सकती है मेरे संस्कार? मेरा-मेरा कहा है तो मेरे ने अपनी जगह बना दी है। आप ब्राह्मण मेरा नहीं कह सकते। यह पास्ट जीवन के संस्कार हैं। शूद्र जीवन के संस्कार हैं। ब्राह्मण जीवन के नहीं है। तो मेरा-मेरा कहा है तो वह भी मेरे अधिकार से बैठ गये हैं। मन से मानो कि यह मेरी नेचर नहीं है। यह दूसरे की चीज़ है, वह नहीं रखनी है। आप तो मरजीवा बन गये ना। ब्राह्मण जीवन के श्रेष्ठ संस्कार जानते हो ना! और यह संस्कार जिनको आप पुराने कहते हो, वह भी पुराने नहीं हैं, आप श्रेष्ठ आत्माओं का पुराने ते पुराना संस्कार अनादि और आदि संस्कार है। यह तो द्वापर मध्य के संस्कार हैं। तो मध्य के संस्कार को समाप्त कर देना, बाप की मदद से कोई मुश्किल नहीं है। होता क्या है? कि समय पर बाप कम्बाइन्ड है, उसे कम्बाइन्ड जान, कम्बाइन्ड का अर्थ ही है समय पर सहयोगी। लेकिन समय पर सहयोग न लेने के कारण मध्य के संस्कार महान बन जाते हैं।

➤ बापदादा यही चाहते हैं कि सब पूजनीय आत्माये हैं। तो पूजनीय आत्माओं का विशेष लक्षण दुआ देना ही है। तो आप सभी जानते हो कि आप सभी पूजनीय आत्माये हैं, तो यह दुआ देना, दुआ देना अर्थात् दुआ लेना अण्डरस्टुड हो जाता है। जो दुआ देता है, जिसको देते हैं उसकी दिल से बार-बार देने वाले के लिए दुआ निकलती है। तो पूज्य आत्माये आपका तो निजी संस्कार है - दुआ देना। अनादि संस्कार है दुआ देना। जब आपके जड़ चित्र भी दुआ दे रहे हैं तो आप चैतन्य पूज्य आत्माये दुआ देना यह तो नेचुरल संस्कार है। इसको कहो मेरा संस्कार। मध्य द्वार के संस्कार नेचुरल हो गया है। नेचर हो गया है। वास्तव में यह संस्कार दुआ देने का नेचुरल नेचर है। जब किसी को दुआ देते हैं, तो वह आत्मा कितनी खुश होती है, वह खुशी का वायुमण्डल कितना सुखदाई होता है। जब लक्ष्य है, 16 कला बनने का। तो 16 कला अर्थात् परमपूज्य, पूज्य आत्मा का कर्तव्य ही है दुआ देना। यह संस्कार चलते फिरते सहज और सदा के लिए बनाओ। हो ही पूज्य। हो ही 16 कला। लक्ष्य तो यही है ना!

➤ संकल्प करो बाप के प्यार में कितना भी माया तूफान सामने लाये लेकिन मास्टर सर्वशक्तिवान आत्माओं के आगे तूफान भी तोहफा बन जायेगा। ऐसा वरदान सदा याद करो। कितना भी ऊंचा पहाड़ हो, पहाड़ बदल के रूई बन जायेगा। अभी समय की समीपता प्रमाण वरदानों को हर समय अनुभव में लाओ। अनुभव की अर्थो रिटी बनो।

➤ जब चाहो तब अपने अशरीरी बनने की, फरिश्ता स्वरूप बनने की एक्सरसाइज़ करते रहो। अभी-अभी ब्राह्मण, अभी-अभी फरिश्ता, अभी-अभी अशरीरी, चलते फिरते, कामकाज करते हुए भी एक मिनट, दो मिनट निकाल अभ्यास करो। चेक करो जो संकल्प किया, वही स्वरूप अनुभव किया?

➤ बापदादा तो देखते हैं कि किसी भी डिपार्टमेंट के लिए, मेहनत नहीं कर रहे हैं, अभी यह नहीं है, मेहनत सब कर रहे हैं। चाहे स्थूल सेवा वाले भी मेहनत बहुत कर रहे हैं। अभी एक बात चाहिए सुनाये क्या? एक बात जैसे सेवा में, कार्य में हर डिपार्टमेंट, हर वर्ग, हर सेक्टर, हर ज़ोन, सेवा बढ़ा रहा है। लेकिन अभी आवश्यकता है - एकता और एकानामी की। यह दो चीज़ें, सम्मान देना और सम्मान लेना। तो एकता, हर एक के सहयोग की अंगुली है ही है। चाहे महारथी हैं, चाहे थोड़ा कम पुरुषार्थी हैं, लेकिन हर एक का सहयोग तो है। अगर कर्मणा करने वाले का सहयोग नहीं मिलता तो टाइम पर कैसे निकलते, टाइम पर कैसे सेवा करते? ठीक है ना? हर एक विशेष है। सम्मान के अधिकारी हैं -इसीलिए हरेक छोटे बड़े को सम्मान दो और सम्मान लो। दो अक्षर याद रखना - एकता और एकानामी।

➤ आप सभी भी सभी को हिम्मत, उमंग उत्साह दिलाने के निमित्त बन यही सेवा करते रहते हो ना! क्योंकि आज हिम्मत और उमंग उत्साह सदा कायम रहे, इसी की आवश्यकता है। तो सभी को जो भी सामने आये, उसको हिम्मत उमंग उत्साह सेकेण्ड की दृष्टि से भी प्राप्त हो। क्योंकि आप सभी मास्टर दाता हो। जो भी आवे, कुछ ले जावे। चाहे स्नेह ले जाये, चाहे सहयोग ले जाये। चाहे हिम्मत ले जाये। चाहे उमंग ले जाये, कुछ न कुछ ले जावे क्योंकि दाता के बच्चे हैं। कभी भी किससे मिलते हो, कोई मिलने आता है, खाली हाथ नहीं जाये। चलो दृष्टि का स्नेह ले जाये, टाइम नहीं है, बात करने की आवश्यकता भी नहीं रहती है, लेकिन जो आया वह गया कैसे? कुछ ले गया? सेकेण्ड की दृष्टि से भी बहुत कुछ ले सकते हैं। दृष्टि की रूहानियत वा दृष्टि से दिल का स्नेह तो सेकेण्ड में भी ले सकते हैं। अभी ब्राह्मणों का आपस में मिलना यह होना चाहिए। तभी आपका वायुमण्डल विश्व में स्नेह, सहयोग, हिम्मत फैलायेगा। सभी ब्राह्मण जो अपने को ब्रह्माकुमार कुमारी समझते हैं, उनको ऐसे ही सेवा में बिजी रहना है। ऐसे नहीं टाइम नहीं मिला, सेकेण्ड तो मिला ना। मिनट भी मिला ना। गाया हुआ है नज़र से निहाल। तो ऐसे संगठन में लहर फैलाओ फिर टाइम देने की आवश्यकता ही नहीं रहेगी।

➤ जब तक कोई अपने सत स्वरूप वा सत बाप को नहीं जानते तो सम्पूर्ण पवित्रता, सत्यता की शक्ति आ नहीं सकती। तो आप सभी सत्यता और पवित्रता की शक्ति के अनुभवी है ना! हैं अनुभवी? अनुभवी हैं?

➤ मन का मालिक मैं राज्य अधिकारी मालिक हूँ। यह स्मृति, यह आत्म स्थिति की सदा स्थिति कम रहती है। है पहला पाठ, मैं मालिक राजा इन कर्मेन्द्रियों का अधिकारी आत्मा हूँ। शक्तिशाली आत्मा हूँ। सर्वशक्तियां आत्मा के निजीगुण हैं। तो बापदादा ने देखा- कि जो मैं हूँ, जैसा हूँ, उसको नेचरल स्वरूप, स्मृति में चलना, रहना, चेहरे से अनुभव होना, समस्या से किनारा होना, इसमें अभी और अटेन्शन चाहिए। सिर्फ मैं आत्मा नहीं, लेकिन कौन सी आत्मा हूँ, अगर यह स्मृति में रखो तो मास्टर सर्वशक्तिवान आत्मा के आगे समस्या वा विघ्न की कोई शक्ति नहीं जो आ सके।

➤ चलन और चेहरे में निश्चय का प्रत्यक्ष स्वरूप रूहानी नशा वह और ही प्रत्यक्ष होना है। इसके लिए यह मालिकपन का नशा इसको बार-बार चेक करो। कोई भी कर्म आरम्भ करते हो, आरम्भ करने टाइम चेक करो - मालिकपन की अर्थो रिटी से कर्मेन्द्रियों द्वारा कर्म कराने वाला कन्ट्रोलिंग पावर, रूलिंग पावर वाली आत्मा हूँ? कि साधारण कर्म शुरू हुआ? इस मालिकपन के अर्थो रिटी की चेकिंग को और बढ़ाना है। और इसकी निशानी है, सदा हर कार्य में डबल लाइट और खुशी की अनुभूति होगी और रिजल्ट सफलता सहज अनुभव होगी। बारबार मैं कौन, यह स्मृति में लाओ। है ही, नहीं, लेकिन स्मृति स्वरूप में लाओ।

➤ संगठन सभी जगह मजबूत करो, चाहे दो हैं, चाहे 4 हैं, चाहे 12 हैं, लेकिन दो का भी संगठन ऐसा मजबूत हो जो दोनों एकमत हों। स्वभाव एक दो में श्रेष्ठ बनाए, मिलाने की कोशिश करो। जैसे दादी को याद करते हैं ना, क्यों याद करते हो? उसकी विशेषता सबको अपनापन दिया। है ना ऐसे? सभी को अपनापन दिया ना, तो क्यों आप सभी नहीं कर सकते हो? सभी ब्राह्मण एक दो में अपनापन अनुभव करें। हर एक यही सोचो सब अपने हैं। अपनापन महसूस हो, ऐसे नहीं यह तो पता नहीं कौन है, क्या है। एक परिवार है ना! यह दिल का वायब्रेशन अपनापन लाता है।

➤ समय की रफ्तार बहुत तीव्र गति से आगे बढ़ रही है। समय की गति को जानने वाले अपने को चेक करो कि मास्टर सर्वशक्तिवान हमारी गति तीव्र है? पुरुषार्थ तो सब कर रहे हैं लेकिन बापदादा क्या देखने चाहते? हर बच्चा तीव्र पुरुषार्थी, हर सबजेक्ट में पास विद आनर है वा सिर्फ पास है? तीव्र पुरुषार्थी के लक्षण विशेष दो हैं - एक - नष्टोमोहा, दूसरा - एवररेडी। सबसे पहले नष्टोमोहा, इस देहभान, देह- अभिमान से है तो और बातों में नष्टोमोहा होना कोई मुश्किल नहीं है। देह-भान की निशानी है वेस्ट, व्यर्थ संकल्प, व्यर्थ समय, यह चेकिंग स्वयं ही अच्छी तरह से कर सकते हो।

साधारण समय वह भी नष्टोमोहा होने नहीं देता। तो चेक करो हर सेकण्ड, हर संकल्प, हर कर्म, सफल हुआ? एवररेडी का अर्थ है - मन-वचन-कर्म, सम्बन्ध-सम्पर्क में समय का आर्डर हो अचानक, तो एवररेडी और अचानक ही होना है। बापदादा समय की समीपता का बार-बार इशारा दे रहा है। स्व-पुरुषार्थ का समय बहुत थोड़ा है, इसलिए अपने जमा के खाते को चेक करो। तीन विधियां हैं, स्वयं का पुरुषार्थ, पुण्य और दुआ। यह तीनों खाते जमा हैं? तो चेक करो क्योंकि अगर अचानक कोई भी पेपर आ जाए, क्योंकि आजकल के समय अनुसार प्रकृति के हलचल की छोटी-छोटी बातें कभी भी आ सकती हैं। इसलिए कर्मों के गति का नॉलेज विशेष अटेन्शन में रहे। कर्मों की गति बड़ी गुह्य है। जैसे ड्रामा का अटेन्शन रहता, आत्मिक स्वरूप का अटेन्शन रहता, धारणाओं का अटेन्शन रहता, ऐसे ही कर्मों की गुह्य गति का भी अटेन्शन आवश्यक है। साधारण कर्म, साधारण समय, साधारण संकल्प इससे प्रालम्ब में फर्क पड़ जाता है।

➤ अभी समय के प्रमाण विश्व की आत्मायें जो दुःखी, अशान्त हो रही हैं उन आत्माओं को दुःख अशान्ति से छुड़ाने के लिए अपनी शक्तियों द्वारा सकाश दो। जैसे प्रकृति का सूर्य सकाश से अंधकार को दूर कर रोशनी में लाता। अपनी किरणों के बल से कई चीजों को परिवर्तन करता। ऐसे ही मास्टर ज्ञान सूर्य अपने प्राप्त हुए सुख शान्ति की किरणों से, सकाश से दुःख अशान्ति से मुक्त करो। मन्सा सेवा से, शक्तिशाली वृत्ति से वायुमण्डल को परिवर्तन करो। तो अभी मन्सा सेवा करो। हिम्मत दिलाओ, उमंग-उत्साह दिलाओ। अभी आवश्यकता सकाश देने की ज्यादा है। इस सेवा में मन को बिजी रखो तो मायाजीत विजयी आत्मा स्वतः ही बन जायेंगे। बाकी छोटी-छोटी बातें तो साइडसीन हैं। साइडसीन देखने के लिए साक्षी दृष्टा की सीट पर सेट रहो, बस। तो साइडसीन मनोरंजन हो जायेगी। तो एवररेडी हो ना? कल भी कुछ हो जाए, एवररेडी हैं? क्योंकि समय आपका इन्तजार कर रहा है। क्या नहीं कर सकते हो? मास्टर सर्वशक्तिवान तो हो ही। दृढ़ संकल्प करो यह करना है, यह नहीं करना है, बस। नहीं करना है, तो दृढ़ संकल्प से नहीं को नहीं करके दिखाओ। मास्टर तो हो ही ना!

➤ समय को सफल करो, हर श्वास को सफल करो, हर संकल्प को सफल करो, हर शक्ति को सफल करो, हर गुण को सफल करो। सफलतामूर्त बनने का यह विशेष वर्ष मनाओ क्योंकि अब की सफलता आपके अनेक जन्म साथ रहने वाली है। चेक करो खजाने मिले, खजानों से सम्पन्न हुए हैं लेकिन स्व प्रति वा विश्व प्रति कितना सफल किया? एक सेकण्ड भी और कोई खजाना भी व्यर्थ न जाये। पहले बताया है कि संगम समय का सेकण्ड, सेकण्ड नहीं है वर्ष के बराबर है। ऐसे नहीं समझना एक सेकण्ड, एक मिनट ही तो गया, व्यर्थ जाना इसको ही अलबेलापन कहा जाता है। आप सबका लक्ष्य है कि बाप ब्रह्मा समान सम्पन्न और सम्पूर्ण बनना है। तो ब्रह्मा बाप ने सर्व खजाने आदि से अन्तिम दिन तक सफल किया, इसका प्रत्यक्ष प्रमाण देखा। सम्पूर्ण फरिश्ता बन गया। तो इस वर्ष, हर दिन अपना चार्ट रखना – सफल और व्यर्थ... क्या हुआ कितना हुआ? अमृतवेले ही दृढ़ संकल्प करना, स्मृति स्वरूप बनना कि सफलता मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है। सफलता मेरे गले का हार है। सफलता स्वरूप ही समान बनना है। ब्रह्मा बाप से प्यार है ना। तो ब्रह्मा बाप का सबसे ज्यादा प्यार किससे था? जानते हो? किससे प्यार था? मुरली से। लास्ट दिन भी मुरली का पाठ मिस नहीं किया। समान बनने में यह चेक करना - ब्रह्मा बाप का जिससे प्यार रहा, ब्रह्मा बाप के प्यार का सबूत है – जिससे बाप का प्यार था, उससे मेरा प्यार स्वतः ही सहज होना चाहिए। ब्रह्मा बाप की और विशेषता क्या रही? सदा अलर्ट, अलबेलापन नहीं। लास्ट दिन भी कितना अलर्ट रूप में अपने सेवा का पार्ट बजाया। शरीर कमजोर होते भी कैसे अलर्ट होके, आधार लेके नहीं बैठे और अलर्ट करके गये। तीन बातों का मन्त्र देके गये। याद है ना सबको। तो जितना अलर्ट रहेंगे, फालो करेंगे, अलबेलापन खत्म होगा। अलबेलापन के विशेष बोल बापदादा बहुत सुनते रहते हैं। जानते हो ना! अगर इन तीन शब्दों को (निराकारी, निर्विकारी और निरंहकारी) सदा अपने मन में रिवाइज़ और रियलाइज़ करते चलो तो आटोमेटिकली सहज और स्वतः समान बन ही जायेंगे।

➤ कर्म से विशेष गुणों का सहयोग, गुणों का दान देने की आवश्यकता है। सुनने कोई नहीं चाहता, देखने चाहता है। तो अभी यह विशेष ध्यान में रखना कि मुझे ज्ञान से, वाचा से तो सेवा करते ही रहते हो और करते ही रहना है, छोड़ना नहीं है लेकिन अभी मन्सा और कर्म, मन्सा द्वारा वायबेशन फैलाओ। सकाश फैलाओ। इस वर्ष स्वयं गुणमूर्त बन गुणों की गिफ्ट देना। गुणों की टोली खिलाना। गुणों की पिकनिक करना क्योंकि बाप समान समय की समीपता प्रमाण और दादी के इशारे प्रमाण, समय की सम्पन्नता अचानक कभी भी होना सम्भव है। तो अभी इस वर्ष क्या बनना है? सबका एक आवाज निकले दिल से, यह बापदादा चाहता है, वह क्या? नो प्रालम्ब, कम्पलीट। प्रालम्ब नहीं लेकिन कम्पलीट बनना ही है। दृढ़ निश्चयबुद्धि, विजयमाला के नजदीक मणका बनना ही है। ठीक है ना! बनना है ना! मधुबन वाले बनना है? नो कम्पलेन? नो कम्पलेन। हाथ उठाओ हिम्मत रखने वाले। नो प्रालम्ब। वाह! मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो।

➤ पुरुषार्थ में सदा स्नेह में खोये हुए रहो। लवलीन रहो तो सहज साधन है स्नेह, दिल का स्नेह। बाप के परिचय की स्मृति सहित स्नेह। बाप के प्राप्तियों के स्नेह सम्पन्न स्नेह। स्नेह बहुत सहज साधन है क्योंकि स्नेही आत्मा मेहनत से बच जाती है। स्नेह में लीन होने के कारण किसी भी प्रकार की मेहनत मनोरंजन के रूप में अनुभव होगी। स्नेही स्वतः ही देह के भान, देह के सम्बन्ध का ध्यान, देह की दुनिया के ध्यान से ऊपर स्नेह में स्वतः ही लीन रहता। दिल का स्नेह बाप के समीप का, साथ का, समानता का अनुभव कराता है। स्नेही सदा अपने को बाप की दुआओं के पात्र समझते हैं। स्नेह असम्भव को भी सहज सम्भव कर देता है। सदा अपने मस्तक पर माथे पर बाप के सहयोग का, स्नेह का हाथ अनुभव करते हैं। निश्चयबुद्धि, निश्चित रहते हैं। जो स्नेह में लवलीन रहते हैं वह सदा अपने को छत्रछाया के अन्दर रहने का अनुभव करते हैं। बापदादा कहते हैं सब बापदादा के स्नेह को भूलो नहीं। स्नेह का सागर मिला है, खूब लहराओ। बापदादा को किसी भी बच्चे की मेहनत की स्थिति अच्छी नहीं लगती। मेरे बच्चे और मेहनत! तो मेहनत मुक्त कब बनेंगे? यह संगमयुग ही है जिसमें मेहनत मुक्त, मौज़ ही मौज़ में रह सकते हैं। मौज़ नहीं है तो कोई न कोई बोझ बुद्धि में है, बाप ने कहा है बोझ मुझे दे दो। मैंपन को भूल ट्रस्टी बन जाओ। जिम्मेवारी बाप को दे दो। स्नेह में खो जाओ, स्नेह के समय को याद करो। हर एक को कोई न कोई समय विशेष स्नेह की अनुभूति होती ही है, हुई है। बाप जानता है हुई है लेकिन याद नहीं करते हो। मेहनत को ही देखते रहते, उलझते रहते।

- अभी समय की समीपता को देख रहे हो। जैसे समय की समीपता हो रही है ऐसे आप सबका भी बाप के साथ समीपता का अनुभव बढ़ना चाहिए ना। बाप से आपकी समीपता समय की समीपता को समाप्त करेगी। क्या आप सभी बच्चों को आत्माओं के दुःख अशान्ति का आवाज कानों में नहीं सुनाई देता! आप ही पूर्वज भी हो, पूज्य भी हो। तो हे पूर्वज आत्मायें, हे पूज्य आत्मायें, कब विश्व कल्याण का कार्य सम्पन्न करेंगे?
- अपनी महसूसता, रियलाइजेशन कम है। ऐसे था, वैसे था, कैसे था... यह भाषा बहुत खेल में आती है। ऐसे- वैसे- कैसे यह खेल बन्द करके मुझे परिवर्तन होना है। मैं परिवर्तन होके दूसरे को परिवर्तन करूँ- लेकिन अगर दूसरे को परिवर्तन नहीं कर सकते हो तो शुभ भावना, शुभ कामना तो रख सकते हो! वह तो आपकी अपनी चीज़ है ना! तो हे अर्जुन मुझे बनना है। जो ओटे सो अर्जुन। अर्जुन माना बाप समान।
- बापदादा की इस वर्ष की यही आश है कि सभी ब्राह्मण आत्मायें, ब्रह्माकुमार ब्रह्माकुमारी जैसे यहाँ यह बैज लगाते हो ना, वैसे दिल में, मन में यह बैज लगाओ, मुझे परिवर्तन होना है। मुझे निमित्त बनना है। परिवर्तन के कार्य में ब्रह्मा बाप समान पहले मैं। दूसरी बातों में भले पीछे रहो, व्यर्थ बातों में। लेकिन परिवर्तन में पहले मैं। ठीक है ना! मंजूर है? ऐसे अपने मन में सदा स्नेह में लवलीन रहने का वायुमण्डल सदा इमर्ज रखो। स्नेह को नहीं छोड़ना। स्नेह में खो जाना सीखो।
- वैराग्य वृत्ति सिर्फ खाने पीने पहनने की नहीं, साधनों की नहीं, लेकिन टोटल मानसिक वृत्ति, दृष्टि और कृति, चारों ओर के ज़ोन में अभी वैराग्य वृत्ति से उपराम, देहभान से उपराम वह अभी लहर चाहिए। बेहद की वैराग्य वृत्ति पहले देह भान की वैराग्य वृत्ति, देह की बातों से वैराग्य वृत्ति, देह की भावना, भाव, इससे वैराग्य वृत्ति चाहिए। तो बापदादा चारों ओर के बच्चों को यह अटेंशन खिंचवा रहे हैं कि तीव्रगति से चाहे ब्राह्मण, चाहे सहयोगी आत्माओं में श्रेष्ठ उन्नति तब होगी जब वैराग्य वृत्ति का वायुमण्डल स्वयं में और सर्व में फैलायेंगे तब आवाज फैलेगा। ब्रह्मा बाप को अन्त तक देखा कितनी बेहद की वैराग्य वृत्ति रही। अपनी देह से भी वैराग्य वृत्ति। बच्चों के सम्बन्ध में भी वैराग्य वृत्ति। तो क्या करेंगे? यही लक्ष्य लक्षण में लाना।
- सम्पूर्ण पवित्रता की वृत्ति अर्थात् हर आत्मा के प्रति शुभ भावना, शुभ कामना। अनुभवी हो ना! और दृष्टि क्या होगी? हर आत्मा को आत्मा रूप में देखना। आत्मिक स्मृति से बोलना, चलना। और कृति अर्थात् कर्म में सुख लेना, सुख देना। यह चेक करो - मेरी वृत्ति, दृष्टि, कृति इसी प्रमाण है? सुख लेना, दुःख नहीं लेना। तो चेक करो कभी दुःख तो नहीं ले लेते हो! कभी कभी थोड़ा-थोड़ा? दुःख देने वाले भी तो होते हैं ना। मानों वह दुःख देता है तो क्या आपको उसको फॉलो करना है! फॉलो करना है कि नहीं? फॉलो किसको करना है? दुःख देने वाले को वा बाप को?
- समय प्रकृति द्वारा अपनी चैलेन्ज कर रहा है। समय की समीपता को कामन बात नहीं समझो। अचानक और एवररेडी शब्द को अपने कर्मयोगी जीवन में हर समय स्मृति में रखो। अपने शान्ति की शक्ति का स्वयं प्रति भी भिन्न-भिन्न रूप से प्रयोग करो। अभी विशेष अपने शक्तियों की सकाश चारों ओर फैलाओ। अब आप मास्टर ज्ञान सूर्य बच्चों द्वारा सुख-शान्ति की लहर फैलाने की अनुभूति होनी चाहिए। लेकिन वह तब होगी, इसका साधन है मन की एकाग्रता। याद की एकाग्रता। एकाग्रता की शक्ति को स्वयं में बढ़ाओ। जब चाहो जैसे चाहो जब तक चाहो तब तक मन को एकाग्र कर सको। अभी मास्टर ज्ञान सूर्य के स्वरूप को इमर्ज करो और शक्तियों की किरणों, सकाश फैलाओ।
- ब्रह्माकुमारियों का बाबा कितना अच्छा है, वह आवाज अभी बढ़ना चाहिए। ब्रह्माकुमारियां अच्छा काम कर रही हैं लेकिन कराने वाला कौन हैं, अभी यह प्रत्यक्षता आनी चाहिए। बाप आया है, यह समाचार मन तक पहुंचना चाहिए। इसका प्लैन बनाओ।
- वारिस अर्थात् जिसके हर श्वास में, हर कदम में बाप और कर्तव्य, और साथ-साथ मन-वचन-कर्म, तन-मन-धन सबमें बाबा और यज्ञ समाया हुआ हो। बेहद की सेवा समाई हुई हो। सकाश देने की समर्थी हो। बाप ने कहा मैंने किया, यह है पक्के वारिस। सोचने वाले नहीं, करने वाले।
- अभी वर्तमान समय के हिसाब से मन-बुद्धि को एकाग्र करने का अभ्यास, जो कार्य कर रहे हो उसी कार्य में एकाग्र करो, कन्ट्रोलिंग पावर को ज्यादा बढ़ाओ। मन-बुद्धि संस्कार तीनों के ऊपर कन्ट्रोलिंग पावर। यह अभ्यास आने वाले समय में बहुत सहयोग देगा। वायुमण्डल के अनुसार एक सेकण्ड में कन्ट्रोल करना पड़ेगा। जो चाहे वही हो। तो यह अभ्यास बहुत आवश्यक है। इसको हल्का नहीं करना। क्योंकि समय पर यही अन्त सुहानी करेगा।
- हर एक को स्व के प्रति, सारे कल्प की प्रालम्ब राज्य की और पूज्य की इकट्टा करने के लिए अभी समय है क्योंकि समय नाजुक आना ही है। ऐसे समय पर शान्ति की शक्ति द्वारा टचिंग पावर कैचिंग पावर बहुत आवश्यक होगी। ऐसा समय आयेगा जो यह साधन कुछ नहीं कर सकेंगे, सिर्फ आध्यात्मिक बल, बापदादा के डायरेक्शन्स की टचिंग, कार्य करा सकेगी। तो अपने में चेक करो - बापदादा की ऐसे समय में मन और बुद्धि में टचिंग आ सकेगी? इसमें बहुतकाल का अभ्यास चाहिए, इसका साधन है- मन बुद्धि सदा ही, कभी कभी नहीं, सदा क्लीन और क्लीयर चाहिए। अभी रिहर्सल बढ़ती जायेगी और सेकण्ड में रीयल हो जायेगी। जरा भी अगर मन में, बुद्धि में किसी भी आत्मा के प्रति या किसी भी कार्य के प्रति, किसी भी साथी सहयोगी के प्रति जरा भी निगेटिव होगा तो उसको क्लीन और क्लीयर नहीं कहा जायेगा। इसलिए बापदादा यह अटेंशन खिंचवा रहा है। सारे दिन में चेक करो - साइलेन्स पावर कितनी जमा की?
- सेवा करो लेकिन शान्ति के शक्ति सम्पन्न सेवा करो। उसमें जितनी रिजल्ट चाहते हो उससे अधिक मिलेगी। बार-बार चेक करो। समय आपको पुकार रहा है या आप समय को समीप ला रहे हो? रचता कौन? तो आपस में ऐसे ऐसे प्लैन बनाओ।
- एक दो के बातों को, स्वभाव को, वृत्ति को समझते, हाँ जी, हाँ जी करने से संगठन की शक्ति साइलेन्स की ज्वाला प्रगट करेगी। ज्वालामुखी देखा है ना। तो यह संगठन की शक्ति शान्ति की ज्वाला प्रगट करेगी।
- अभी बापदादा क्या चाहते हैं? बापदादा यही चाहते कि जो प्रतिज्ञा की है, समान बनने की, तो हर एक बच्चे की सूरत में बाप की मूर्त दिखाई दे। हर एक बोल में बाप समान बोल हो, बापदादा के बोल वरदान रूप बन जाते हैं। तो आप सब यह चेक करो, हमारी सूरत में बाप की मूर्त दिखाई देती है? बाप की मूर्त क्या है? सम्पन्न, सब बात में सम्पन्न। ऐसे हर एक बच्चे के नयन, हर एक बच्चे का मुखड़ा बाप समान है? सदा मुस्कराता हुआ चेहरा है? कि कभी सोच वाला, कभी व्यर्थ संकल्पों की छाया वाला, कभी उदास, कभी बहुत मेहनत वाला, ऐसा चेहरा तो नहीं है? सदा आपके

चेहरे से बाप के गुण दिखाई दें, चलन से बाप की श्रीमत् दिखाई दे। सदा मुस्कराता हुआ चेहरा हो। सदा सन्तुष्ट रहने और सन्तुष्ट करने की चाल हो। हर कर्म में, कर्म और योग का बैलेन्स हो

➤ मुरझाने का कारण है थोड़ा सा अलबेलापन। हो जायेगा, देख लेंगे, कर ही लेंगे, पहुंच ही जायेंगे.... तो यह गें गें की भाषा नीचे गिरा देती है। तो चेक करो - कितना समय बीत गया, अभी समय की समीपता का और अचानक होने का इशारा तो बापदादा ने दे ही दिया है, दे रहा है नहीं, दे ही दिया है। ऐसे समय के लिए एवररेडी, अलर्ट आवश्यक है। अलर्ट रहने के लिए चेक करो - हमारा मन और बुद्धि सदा क्लीन और क्लियर है? क्लीन भी चाहिए, क्लियर भी चाहिए। इसके लिए समय पर विजय प्राप्त करने के लिए मन में, बुद्धि में कैचिंग पावर और टचिंग पावर दोनों बहुत आवश्यक हैं। ऐसे सरकमस्टांश आने हैं जो कहाँ दूर भी बैठे हो लेकिन क्लीन और क्लियर मन और बुद्धि होगा तो बाप का इशारा, डायरेक्शन, श्रीमत् जो मिलनी है, वह कैच कर सकेंगे। टच होगा यह करना है, यह नहीं करना है। इसीलिए बापदादा ने पहले भी सुनाया है, तो वर्तमान समय साइलेन्स की शक्ति अपने पास जितनी हो सके जमा करो। जब चाहो, जैसे चाहो वैसे मन और बुद्धि को कन्ट्रोल कर सको। व्यर्थ संकल्प स्वप्न में भी टच नहीं करे, ऐसा माइन्ड कन्ट्रोल चाहिए। अचानक पेपर आने हैं क्योंकि फाइनल रिजल्ट के पहले भी बीच-बीच में पेपर लिये जाते हैं।

➤ अन्त में इस साइलेन्स की सेवा का सहयोग देना पड़ेगा। सरकमस्टांश अनुसार यह बहुत ध्यान में रखो, साइलेन्स की शक्ति या अपने श्रेष्ठ कर्मों की शक्ति जमा करने की बैंक सिर्फ अभी खुलती है और कोई जन्म में जमा करने की बैंक नहीं है। अभी अगर जमा नहीं किया फिर बैंक ही नहीं होगी तो किसमें जमा करेंगे! इसलिए जमा की शक्ति को जितना इकट्ठा करने चाहो उतना कर सकते हो। वैसे लोग भी कहते हैं जो करना है वह अब कर लो। जो सोचना है अब सोच लो। अभी जो भी सोचेंगे वह सोच, सोच रहेगा और कुछ समय के बाद जब समय की सीमा नजदीक आयेगी तो सोच पश्चाताप के रूप में बदल जायेगा। यह करते थे, यह करना था... तो सोच नहीं रहेगा, पश्चाताप में बदल जायेगा। इसीलिए बापदादा पहले से ही इशारा दे रहा है। साइलेन्स की शक्ति- एक सेकण्ड में कुछ भी हो, साइलेन्स में खो जाओ।

➤ मैं आत्मा- यह कर रही हूँ। मैं और मेरा, हृदय का बदल बेहद का हो जाए। हो सकता है? हो सकता है? कांध तो हिलाओ। आदत डालो, मैं- फौरन आवे आत्मा। और जब मैं-पन आता है तो एक शब्द याद आवे -करावनहार कौन? बाप करावनहार करा रहा है। करावनहार शब्द करने के समय सदा याद रहे। मैं-पन नहीं आयेगा। मेरा विचार, मेरी ड्युटी, ड्युटी का भी बहुत नशा होता है। मेरी ड्युटी... लेकिन देने वाला दाता कौन! यह ड्युटीज़ प्रभु की देन हैं। प्रभु की देन को मैं मानना, सोचो अच्छा है?

➤ आज बाप का जन्म दिन मना रहे हो ना, तो जन्म दिन पर क्या करते हैं? कोई न कोई गिफ्ट देते हैं। देते हैं ना? तो बाप को क्या गिफ्ट देंगे? जो बाप ने कहा वह करके दिखाना, यही गिफ्ट देना। और बापदादा भी आप सबको गिफ्ट दे रहा है, जो लेने चाहे वह ले सकते हैं। विशेष वरदान है, लेकिन वरदान काम में तब आयेगा जब रोज़ अमृतवेले इस वरदान को रिवाइज करेंगे। गिफ्ट को रिवाइज करेंगे। तो बापदादा यही गिफ्ट दे रहे हैं - एक कदम हिम्मत का कभी नहीं छोड़ना, तो बापदादा हजार कदम मदद का देगा। ऐसे नहीं देखना, देखें बाबा मदद करता है या नहीं, इम्तहान नहीं लेना। बंधा हुआ है बाप। आप भी बंधे हुए हो बाप भी बंधा हुआ है। तो इस गिफ्ट को रोज़ बार-बार देखना। रोज़ अमृतवेले देखना और कर्म करते कर्मयोगी जीवन में भी बीच-बीच में रिवाइज करना।

➤ खजाने तो मिले लेकिन जमा करने की विधि क्या है? जो जितना निमित्त और निर्माण बनता है उतना ही खजाने जमा होते हैं। तो चेक करो - निमित्त और निर्माण बनने की विधि से हमारे खाते में कितने खजाने जमा हुए हैं? मेरे चलन और चेहरे पर बेफिक्र बादशाह का निश्चय और नशा है? बेफिक्र बादशाह का संकल्प यही होगा जो हो रहा है वह बहुत अच्छा और जो होने वाला है वह और ही अच्छे ते अच्छा होगा।

➤ तीन प्रकार के खाते जमा कर सकते हैं। एक है - अपने पुरुषार्थ प्रमाण खजाने जमा करना। दूसरा खाता है - दुआओं का खाता। दुआओं का खाता जमा होने का साधन है सदा सम्बन्ध-सम्पर्क और सेवा में रहते हुए संकल्प, बोल और कर्म में, तीनों में स्वयं भी स्वयं से सन्तुष्ट और दूसरे भी सर्व और सदा सन्तुष्ट हों। और तीसरा खाता है - पुण्य का खाता। पुण्य के खाते का साधन है - जो भी सेवा करते हैं, चाहे मन से, चाहे वाणी से, चाहे कर्म से, चाहे सम्बन्ध में, सम्पर्क में आते सदा निःस्वार्थ और बेहद की वृत्ति, स्वभाव, भाव और भावना से सेवा करना। बापदादा ने सुना दिया है, इशारा दे दिया है कि अभी समय की समीपता तीव्रगति से आगे बढ़ रही है इसलिए अपनी चेकिंग बारबार करनी है।

➤ अभी समय समीप होने के नाते से बापदादा एक शब्द सभी बच्चों के अन्दर से, संकल्प से, बोल से और प्रैक्टिकल कर्म से चेन्ज करना देखने चाहते हैं। एक शब्द वह है कि 'कारण' शब्द को परिवर्तन कर 'निवारण' शब्द को सामने लाओ। अभी दुःख अशान्ति बढ़ते देख सभी मैजारिटी आत्मायें आप मुक्तिदाता आत्माओं को याद करती हैं। मन में दुःखी होके चिल्लाते हैं - हे मुक्तिदाता मुक्ति दो। क्या आपको आत्माओं के दुःख अशान्ति की पुकार सुनने नहीं आती? अभी तो दिन-प्रतिदिन आपके आगे मुक्तिदाता- मुक्ति दो की क्यू लगने वाली है। लेकिन अभी तक अपने पुरुषार्थ में भिन्न-भिन्न कारण शब्द के कारण मुक्ति का दरवाजा बन्द है। इसलिए मुक्तिदाता बन पहले इस 'कारण' शब्द को मुक्त करो।

➤ ड्रिल ---चित्र निकालो कि मैं विशेष आत्मा, स्वमानधारी आत्मा, बापदादा की पहली रचना श्रेष्ठ आत्मा, बापदादा के दिलतख्तनशीन हूँ। तख्तनशीन हो गये! साथ में परमात्म रचना इस वृक्ष के जड़ में बैठी हुई पूर्वज और पूज्य आत्मा हूँ, इस स्मृति का तिलकधारी हूँ। स्मृति का तिलक लगाया! साथ में बेफिक्र बादशाह, सारा फिकर का बोझ बापदादा को अर्पण कर डबल लाइट की ताजधारी हूँ। तो ताज, तिलक और तख्तधारी, ऐसी बाप अर्थात् परमात्म प्यारी आत्मा हूँ।

➤ मैं कौन? यह शब्द बार-बार स्मृति में लाओ और अपने भिन्न-भिन्न स्वमान, टाइटल, भगवान के मिले हुए टाइटल। आजकल लोगों को, मनुष्य को मनुष्य से टाइटल मिलता तो भी कितना महत्व समझते हैं और आप बच्चों को बाप द्वारा कितने टाइटल मिले हैं? स्वमान मिले हैं? सदा स्वमान की लिस्ट अपने बुद्धि में मनन करते रहो। इसी नशे में रहो तो कारण जो हैं ना, वह शब्द मर्ज हो जायेगा और निवारण, हर कर्म में दिखाई देगा।

- कई बच्चे- देखा है पुरुषार्थ करके थोड़े कमजोर हो जाते हैं ना तो अकेलापन पसन्द करते हैं, कोई को साथ नहीं पसन्द करते, अकेला रहना, अकेला सोचना, यह अकेलापन भी नहीं ठीक, प्रभू परिवार है। इतने प्रभु परिवार के साथी अकेले कैसे होंगे! यह माया की चालाकी हैं। पहले अकेला कर देती फिर वार करती।
- सदा पाण्डव यही समझें, कहाँ भी रहते हो चाहे सेन्टर पर रहते हो, चाहे घर में रहते हो लेकिन शक्तियों के रखवाले हो। कोई की भी कोई उल्टी सुल्टी नज़र न जाये। ऐसे सेवाधारी हो?
- कभी-कभी- थोड़ा-थोड़ा, यह आवाज अभी तक भी आता है - बापदादा ने कहा है कि ब्राह्मण आत्माओं के जीवन रूपी डिक्शनरी में यह दोनों शब्द निकल जाना चाहिए। तो कौन सा शब्द होना चाहिए? कभी-कभी कि सदा? हर खजाने के आगे चेक करो - सर्व शक्तियां सदा है? सर्व गुण सदा है? बापदादा को शब्द अच्छा लगता है - सदा।
- वरदान है बीज लेकिन बीज को जितना फलीभूत करते हैं उतना ही वह वृद्धि को पाता है। फलीभूत करने का रहस्य क्या है? समय पर कार्य में लगाना। वरदान को सिमरण करते हैं, लेकिन वरदान स्वरूप बनने में नम्बरवार बन जाते हैं।
- बापदादा की दिल की आश पहले भी सुनाया है। सभी ने हाथ उठाया था, याद है कि हम कारण को समाप्त कर समाधान स्वरूप बनेंगे। याद है होमवर्क? परमात्म प्यार उनके पीछे बाप ने कहा और बच्चों को करना मुश्किल क्यों? गीत बहुत अच्छे-अच्छे गाते हो। बाबा हम न्योछावर करने वाले परवाने हैं, शमा पर फिदा होने वाले हैं। तो यह कारण शब्द को स्वाहा नहीं कर सकते? लक्ष्य रखा है, बापदादा ने देखा, टोटल इस वर्ष की सीज़न में सभी ने संकल्प किया लेकिन सफलता की चाबी दृढ़ता - करना ही है, उसके बजाए कभी-कभी, कर रहे हैं, चल रहे हैं, कर ही लेंगे। यह संकल्प दृढ़ता को साधारण बना देता है। दृढ़ता में कारण शब्द आता ही नहीं है। निवारण हो जाता है। कारण आते भी हैं लेकिन चेकिंग होने के कारण, कारण निवारण में बदल जाता है।
- चार ही सबजेक्ट में अनुभव स्वरूप, अनुभव के अर्थॉरिटी - उसकी कमी दिखाई दी। अनुभवी स्वरूप का अर्थ ही है ज्ञानी तू आत्मा के हर कर्म में लाइट और माइट नेचुरल होना चाहिए। अनुभवी स्वरूप से हर कर्म नेचुरल श्रेष्ठ और सफल होगा। ज्ञान को जानना और ज्ञान के अनुभव स्वरूप के अर्थॉरिटी में हर कर्म करना, उसमें अन्तर है। तो अनुभवी स्वरूप हैं? चेक करो। सोचते हैं - लेकिन अनुभवी स्वरूप बनना, योगयुक्त राजयुक्त नेचर हो जाए, नेचुरल हो जाए। धारणा में भी सर्व गुण स्वतः ही हर कर्म में दिखाई दें। ऐसे अनुभवी स्वरूप में सदा रहना, अनुभव की सीट पर सेट होना इसकी आवश्यकता का अटेन्शन रखना, यह आवश्यक है। अनुभव के अर्थॉरिटी की सीट बहुत महान है। अनुभवी को माया भी मिटा नहीं सकती क्योंकि माया की अर्थॉरिटी से अनुभव की अर्थॉरिटी पदमगुणा ऊंची है। सोचना अलग है, मनन करना अलग है, स्वरूप, अनुभवी स्वरूप बनकर चलना, अभी इसकी आवश्यकता है। अचानक की घण्टी अभी तेज हो रही है। उसी अनुसार अभी- इस वर्ष मैं चार ही सबजेक्ट में अनुभवी स्वरूप कहाँ तक बना हूँ?
- बापदादा सिर्फ एक शब्द कहते हैं, अभी तीव्र गति से उड़ती कला में उड़ते रहो और अपने उड़ती कला के वायब्रेशन से वायुमण्डल में सहयोग का वायुमण्डल फैलाओ। क्या अपने हमजिन्स मनुष्यात्माओं को दुःख और अशान्ति से परिवर्तन नहीं कर सकते? बाप का इशारा समय प्रति समय प्रैक्टिकल देख रहे हो - अचानक एवररेडी। क्या दादी के लिए सोचा था कि जा सकती है? अचानक का खेल देखा ना। तो इस वर्ष एवररेडी। बाप के दिल की आशाओं को पूर्ण करने वाले आशाओं के दीपक बनना ही है। तो इस वर्ष लक्ष्य रखो लेकिन लक्ष्य और लक्षण को समान रखना। ऐसे नहीं हो लक्ष्य बहुत ऊंचा और लक्षण में कमजोरी, नहीं। अभी दृढ़ता हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है, इस संकल्प को अनुभव के स्वरूप में लाओ। चेक करो - जो कहते हैं उसका अनुभव भी करते हैं? पहला शब्द- मैं आत्मा हूँ, इसी को ही चेक करो। इस आत्मा स्वरूप के अनुभव की अर्थॉरिटी हूँ? क्योंकि अनुभव की अर्थॉरिटी नम्बरवन है। सोचो हर बात सामने लाओ। चाहे आत्मा, चाहे परमात्मा, चाहे चक्र सभी में अनुभव मूर्त कहाँ तक बने हैं?
- अभी जो हर एक ने संकल्प किया है, बाप को प्रत्यक्ष करना ही है। उसकी डेट अपने परिवर्तन की कलम से सेट करो। पैन्सिल से सेट नहीं होगा, यह आपके परिवर्तन के तीव्र पुरुषार्थ की कलम से प्रत्यक्षता की डेट सहज ही फिक्स हो जायेगी। सिर्फ सेन्टर नहीं, पहले सेन्टर को मजबूत करो फिर अपने कनेक्शन के सेन्टर को मजबूत करो, फिर ज़ोन को मजबूत करो। विदेश वाले भी, देश विदेश दोनों को बापदादा कार्य दे रहे हैं। कौन नम्बरवन आता है? निर्विघ्न। हो सकता है ना! सारा ज़ोन निर्विघ्न हो जाए, हो सकता है? तो एक दो को भी उमंग उत्साह देकर सभी को निर्विघ्न बनाना है।